अतिरिक्त भाग

अध्ययन 1

यूनानी भाषियों का फैलना (4:4)

उपजाऊ भूमि और अपनी व्यापारिक आवश्यकताओं के लिए प्राचीन यूनानियों ने भूमध्य सागर और खारे समुद्र के आस पास अपनी कालोनियां बसा ली थीं। यह विशेष रूप से मसीह के पहले की आठवीं से छठी शताब्दी के अंत में हुआ। मिस्र के दक्षिण में नील नदी के छठे झरने वाली जगह इथियोपिया की राजधानी (बाइबल वाला कूश) में मेरो नामक स्थान में ये प्राचीन कलाकृतियां मिली हैं।

कालोनियों को बसाने का दूसरा बड़ा प्रयास सिकंदर महान की विजयों के साथ चौथी शताब्दी में हुआ। बड़े फारसी साम्राज्य को जीतने के लिए वह केवल पूर्व की ओर से आगे बढ़ने में सफल ही नहीं हुआ बल्कि इसकी दूर दूर की सीमाओं तक भी बढ़ गया। सिकंदर का युद्ध भारत की सेनाओं के साथ भी हुआ जहां के योद्धा हाथियों की सवारी करते हुए युद्ध किया करते थे। उसने अपने पूर्व निजी सहायक गुरू, महान दार्शनिक अरस्तू की सलाह मानी, जिस कारण वह जिधर भी जाता विजयी होता और वहां पर वह बस्तियां बना देता।

सिकंदर महान इन बस्तियों में यूनानी भाषा बोलने वाले अधिकारियों को नियुक्त करता जो परम्परागत यूनानी रहन-सहन की शिक्षा देकर उन्हें यूनानी संस्कृति के अनुसार ढाल कर नगरों को बसा सकते थे। इसमें इसका भवन-निर्माण, खेलों की सुविधाएं, सभागार, विद्यालय, संस्कृति, भाषा, साहित्य, कानून और रीति रिवाज शामिल थे। इन बुनियादी कार्यों के लिए ठहराए गए लोग ऐसी बस्तियों में रीति रिवाज कायम करते और दूसरों के लिए नमूना बनते थे। इसके अलावा आस पास के इलाकों की बस्तियों में भी यूनानी भाषा को लागू करने की कोशिश करने की जिम्मेदारी भी इन्हीं की होती थी। सिकंदर की विजयें अपने आप में साधन न होकर एक बड़े उद्देश्य को हासिल करने के लिए थीं जिसका इरादा संसार के साथ नैतिक रूप से रहन-सहन के उच्च यूनानी रीति रिवाजों को साझा करना था।

सिकंदर का पक्का मानना था कि यूनानियों की विरासत अन्य लोगों से बेहतर है जिसे वह दूसरे लोगों तक पहुंचाना चाहता था। उसका मत था कि ऐसा अच्छा जीवन सब लोगों को मिलना चाहिए। परन्तु ऐसे अच्छे जीवन को यूनानी भाषा और यूनानी संस्कृति के भेद के साथ ही पाया जा सकता था। परन्तु सिकंदर खुद यूनानी नहीं था, बल्कि वह मकिदुनी राजा फिलिप द्वितीय के शाही महल में पला बड़ा एक मकिदूनी व्यक्ति था। एक कुशल राजनेता और रणनीतिकार फिलिप ने धीरे धीरे अपने साम्राज्य को उत्तर की ओर अपने पड़ोसी राज्यों में फैला लिया, जिसे आज के समय में ग्रीस कहा जाता है। अंत में वह 338 ई.पू. में कैरोनियां के युद्ध में एथेंस और थेबेस को हराकर पूरे यूनान का राजा बन गया।

अपने समय के युद्ध की नई और उत्तम युद्धनीतियों को सीखने के कारण फिलिप ने यूनान के सभी नगरों में सैनिकों को युद्ध का प्रशिक्षण देकर एकजुट किया जिसके कारण फारसी साम्राज्य पर उसके पुत्र की विजय का रास्ता साफ हो गया। उसे चाहे ''जंगली फिलिप'' कहा

जाता है, परन्तु उसने अपने समय की बड़ी बड़ी साहित्यिक हस्तियों को अपने दरबार में रखा और अपने समय के सबसे बड़े विद्वान और दार्शनिक अरस्तू को अपने पुत्र का, जो बाद में ''सिकंदर महान'' के नाम से प्रसिद्ध हुआ, निजी शिक्षक बनने के लिए नियुक्त किया।

यूनानी रहन-सहन अर्थात ''हेलेनिज़म'' का अपनी संस्कृति, कला, भवन-निर्माण, साहित्य, कानून और शैक्षणिक संस्थाओं का संसार पर प्रभाव पड़ा। आने वाली पीढ़ियों में यूनानी भाषा साधारण लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा बन गई।

रोम ने पूर्व की ओर बढ़ते हुए चाहे यूनान पर सैनिक विजय पा ली थी, पर कहते हैं कि सांस्कृतिक तौर पर यूनानियों ने रोम को जीत लिया था। खास तौर पर इतालवी प्रायद्वीप में दक्षिण में दो संस्कृतियां पहले ही एक दूसरे के सम्पर्क में आ चुकीं थीं, जो बस्ती बनाने में रोमियों से आगे थीं। रोमियों ने जो कुछ देखा उसे सराहा और वैसा ही किया। बहुतों का मानना है कि रोमियों ने इतरसकेनियों से बड़ी बड़ी दीवारें और डाटों को इस्तेमाल में किए जाने का हुनर सीखा जिन पर भूकम्प का असर नहीं होता था। परन्तु बर्तन, कानून और मन्दिर बनाने की कला उन्होंने यूनानियों से ही सीखीं। साहित्य और कविता के उनके प्रारम्भिक प्रयास निश्चय ही उसी की नकल थे जो उन्होंने यूनानियों से सीखा था।

यह हास्यास्पद ही लगता है कि इतालवी प्रायद्वीप के पूर्व तक यूनान पर रोमी विजय के साथ पश्चिमी भूमध्य सागर में यूनानी भाषा ऐसे फैल गई जैसे यूनानी लोग खुद कभी नहीं कर पाते। रोमी सैनिक टुकड़ियों के लिए अपने पड़ोसी पूर्वी यूनान को जीत कर अपने बेटे के लिए शिक्षक के रूप में कैदी को ले जाना आम बात थी। यूनानी व्यक्ति उसका घरेलू दास बन जाता और उसके लड़के को यूनानी भाषा सीखने में सहायता करता।

कई वर्ष पहले ब्रिटिश म्यूज़ियम को देखते समय मेरा और मेरे साथियों का ध्यान प्रदर्शन के लिए रखे हुए बर्तनों के ऊपर पड़ा। इन टूटे हुए बर्तनों के टुकड़ों पर यूनानी भाषा साफ़ साफ़ पढ़ी जा सकती थी। लगता था कि जैसे उन शब्दों में कुछ संकेत दिए हों। नजदीक से देखने पर पता चलता है कि यह क्रियाओं के मेल, संज्ञाएं व विशेषणों के ढलान तथा अन्य शब्द थे। यह इस महत्वपूर्ण शिक्षा को सीखने के अपने प्रयासों में किसी रोमी बच्चे के स्कूल के कार्य के उदाहरण थे।

उस समय में यूनानी और रोमी जगत में रहने वाला कोई भी यहूदी लड़का शिक्षा के इस दौर से बच नहीं सकता था, खासकर जब वह उन प्रवासियों के बीच में रहता हो। यहूदियों के ऊपर यूनानियों के प्रभाव को प्रेरितों 11:20 से देखा जा सकता है जब साइप्रसवासियों और कुरेने के लोगों ने सुसमाचार को अन्यजातियों (यूनानियों) तक पहुंचाया। सुसमाचार के ये प्रचारक निश्चय ही यहूदी थे और यदि वे यहूदी थे तो वे ऐसे यहूदी थे जो उस समय की वैश्विक भाषा और बाहरी संस्कृति से प्रभावित थे। भूमध्य सागर के तटीय नगरों और इसके टापुओं में रहने वाली बड़ी यहूदी जनसंख्या यूनानी भाषा के प्रभाव में आ गई। यहूदिया भी यूनानी संस्कृति से प्रभावित हुआ था। उदाहरण के लिए यीशु को क्रूस चढ़ाते समय लगाई गई फट्टी में उसके कथित आरोप को इब्रानी, लातीनी और यूनानी भाषा में लिखा गया था (यूहन्ना 19:19, 20)।

यूनानी जो उस समय के रोमी जगत में बोली जाने वाली आम भाषा थी, ने ''समय पूरा हुआ'' (4:4) में महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रेरितों और सुसमाचार प्रचारकों ने फलिस्तीन के

बाहर सुसमाचार का प्रचार यूनानी भाषा में किया। प्रेरणा पाए हुए लेखकों ने नये नियम की पुस्तकों को लिखने के लिए इसी भाषा का इस्तेमाल किया।

अध्ययन 2

नये नियम में प्रेरितों का रुतबा और भूमिका

बारहों की सेवकाई और उनकी बुलाहट। सुसमाचार के विवरणों में मिलता है कि मसीह ने अपनी विशेष सेवकाई को पूरा करने के लिए बारह पुरुषों को चुना। मत्ती 10:1 "फिर उसने अपने बारह चेलों को पास बुलाकर" कहने के साथ आरम्भ होता है। "चेले" के लिए यूनानी शब्द (*mathētēs*) का अर्थ "सीखने वाला," "विद्यार्थी," या "शिक्षार्थी" है। यीशु ने इन बारहों को जिन्होंने उसकी शिक्षा को सुना और उसके आश्चर्यकर्मों को देखा था, "अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारियों और सब प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करें" (मत्ती 10:1)।[1] वचन में उन्हें "प्रेरित" कहा गया है, उनके नाम दिए गए हैं और बाइबल हमें बताती है कि यीशु ने उन्हें लिमिटिड कमीशन या सीमित आज्ञा देकर "भेजा" (मत्ती 10:2-5)। संज्ञा शब्द "प्रेरित" (*apostolos*) क्रिया शब्द "बाहर भेजना" (*apostellō*) के साथ है और इसका अर्थ "किसी मिशन पर भेजा जाना" है। इसका अनुवाद "दूत," "मध्यस्थ," या "प्रतिनिधि" भी हो सकता है। इन लोगों को मसीह के दूत के रूप में भेजा गया था और इन्होंने उन बातों को बताना था जो उन्होंने उसकी सेवकाई के दौरान सीखी थीं।

इन बारहों का चयन किसी वोट या किसी वहम के साथ या बिना दूरदर्शिता के नहीं था। लूका 6:12, 13 संकेत देता है कि उनका चयन और "प्रेरित" नाम देने से पहले, उसने "परमेश्वर के सामने प्रार्थना करते हुए रात बिताई।" यीशु उन बारहों के साथ जिन्हें उसने चुना था, विशेष सम्बन्ध चाहता था ताकि "वे उसके साथ-साथ रहें, और वह उन्हें भेजे कि प्रचार करें" (मरकुस 3:14)। उनके लिए उसके साथ-साथ रहना आवश्यक था क्योंकि उन्होंने यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई, सामर्थ और तेज के गवाह होना था (लूका 24:46-49; यूहन्ना 1:14; 15:27; प्रेरितों 1:7, 8, 21-26; 5:32; 2 पतरस 1:16; 1 यूहन्ना 1:1-3)।

बारहों की प्रेरणा। "लिमिटिड कमीशन" या सीमित आज्ञा में चाहे, प्रेरितों के पास आश्चर्यकर्म करने की शक्ति थी, परन्तु अपनी अंतिम सेवकाई और संदेश की उनकी समझ भी सीमित थी। पिन्तेकुस्त वाले दिन से "वे सब पवित्र आत्मा से भर गए" (प्रेरितों 2:4) थे, उन्हें समझ में आने लगा था कि उन्हें क्या करना है। प्रेरितों के काम में लूका की शब्दावली की समीक्षा करने से पता चलता है कि "में बपतिस्मा," "पर आएगा," "पर उंडेलूंगा," और "उंडेला गया" (प्रेरितों 1:5, 8; 2:17; 10:45, 47; 11:15-17) सब समानार्थी शब्द हैं। सामरिया में इस आश्चर्यकर्म (पवित्र आत्मा का बपतिस्मा) के न होने की बात पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए, क्योंकि वहां उन पर आत्मा नहीं उतरा था जिन्होंने विश्वास किया था (प्रेरितों 8:16)। पतरस और यूहन्ना को जाकर नये मसीहियों के ऊपर हाथ रखने पड़े थे, तभी उन को पवित्र आत्मा का दान मिलना था। इसलिए आत्मा का बपतिस्मा प्रेरितों 2 (प्रेरिताई के संदेश को पक्का करने का

चिह्न) और प्रेरितों 10 में (यह पुष्टि करने का चिह्न कि यह अन्यजातियों के लिए) एक अनोखी घटना थी। प्रेरितों 11:15 में पतरस ने इन दोनों घटनाओं को आपस में मिला दिया। "पवित्र आत्मा उन [कुरनेलियुस के घराने] पर उसी रीति से उतरा जिस रीति से आरम्भ में हम [प्रेरितों] पर उतरा था।"

यीशु जब प्रेरितों के साथ था तो उसने आत्मा का महत्वपूर्ण दान देने का वायदा किया था जिससे उन्हें आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ मिलनी थी। यह चाहे अपने आप में एक अजीब बात थी पर इसके साथ उनको बुलाए जाने का अंतिम उद्देश्य पूरा नहीं होना था। यीशु ने उन्हें केवल आत्मा की शक्तियां ही नहीं बल्कि आत्मा ही दे देना था, जिसने उनके अंदर होना था (यूहन्ना 14:16, 17, 26; 15:26)। यह समझना आवश्यक है कि यूहन्ना 16:12, 13 में यीशु ने क्या कहा, "मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा" (देखें यूहन्ना 14:26; 15:26)।

पिन्तेकुस्त वाले दिन जब आत्मा यीशु की प्रतिज्ञा के अनुसार सामर्थ सहित आया (लूका 24:49; प्रेरितों 1:8; 2:43), तब परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रेरितों की समझ में जबर्दस्त बदलाव आया। तभी "वे सब पवित्र आत्मा से भर गए" (प्रेरितों 2:4) और अचानक ईश्वरीय सामर्थ के साथ उन्हें संदेश को पूरा करने के योग्य बनाया गया जो यीशु मसीह ने उन्हें देने के लिए खुद शुरू किया था (इब्रानियों 2:3, 4)। संदेश को पूरा करने के बाकी काम को प्रेरितों के ऊपर छोड़ दिया गया, जिसे वे पवित्र आत्मा से भरपूर होने से पहले नहीं समझ सकते थे। सुसमाचार का यह शुभ समसचार उनके जीवनकाल में पूरा हो जाना था। इस कारण यहूदा अपने पाठकों को यह समझा पाया कि तुम "उस विश्वास के लिए पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था" (यहूदा 3)।

कलीसिया की स्थापना के लिए प्रेरित आधार थे। पिन्तेकुस्त के दिन तीन हज़ार लोगों के बपतिस्मा लिए जाने के बाद "वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, ... में लौलीन रहे" (प्रेरितों 2:42)। पौलुस ने समझाया कि "परमेश्वर का घराना" अर्थात कलीसिया "प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नेव पर" बनी है, "जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है" (इफिसियों 2:19, 20)। प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना को स्वर्गीय नगर की शहरपनाह दिखाई गई है जिस "की बारह नींवें थीं, और उन पर मेम्ने के बारह प्रेरितों के बारह नाम लिखे थे" (प्रकाशितवाक्य 21:14)।

पौलुस का महत्वपूर्ण मामला। औरों की तरह पौलुस चाहे पृथ्वी पर यीशु की सेवकाई का चश्मदीद नहीं था, परन्तु उसने जिलाए गए और सामर्थी यीशु मसीह को देखा था। उसने इस तथ्य को माना कि उसने प्रेरित होने की बुलाहट की शर्त को पूरा करने के लिए दमिश्क के मार्ग पर प्रभु यीशु को देखा और उसकी आवाज को सुना था (1 कुरिन्थियों 9:1; 15:3-8; देखें प्रेरितों 1:21-26; 22:12-14)।

फिर भी पौलुस ने माना कि वह खास था और वह प्रश्नों का उत्तर देने को तैयार था। वास्तव में पौलुस पर सचमुच में प्रेरित होने की उसकी प्रामाणिकता पर बार बार सवाल उठाए जाते थे, जो कि निश्चित रुप में उसके विरोध करने वाले के द्वारा होते थे। उसने अपने बुलाए जाने की प्रामाणिकता को साबित करने के लिए उस अत्यधिक पीड़ा जो उसने सही थी और आश्चर्यकर्म

के चिह्नों की ओर जो उसने किए थे, ध्यान दिलाया (2 कुरिन्थियों 11:23-28; 12:11-13; 13:1-3)। किसी धोखेबाज ने इन परेशानियों को नहीं सहना था और उसने ऐसे आश्चर्यकर्म नहीं कर पाने थे।

पौलुस का प्रेरित होना इस बात में अनोखा था कि यह अन्यजातियों पर केन्द्रित था (2:7-9; प्रेरितों 9:15, 16; 26:16-18; रोमियों 1:1-5; 11:13, 14)। उसने कभी भी इस सच्चाई पर संदेह नहीं किया कि वह मसीह की पूरी सामर्थ पाया हुआ दूत (2 कुरिन्थियों 5:18-20) और परमेश्वर की उस सनातन मंशा के गुप्त "भेद" को प्रकट करने वाला व्यक्ति था जो "अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं पर प्रकट किया गया है" (इफिसियों 3:3, 5)।

अन्य प्रेरित। क्या नये नियम में बताए गए प्रेरितों के अलावा और "प्रेरित" भी थे? यदि हैं तो उनके लिए इस शब्द का इस्तेमाल किस अर्थ में हुआ है?

1. *अपोस्टोलोस* शब्द को कई बार उनके लिए इस्तेमाल किया जाता था जिन्हें स्थानक मण्डलियों की ओर से भेजा जाता था। पौलुस ने यरूशलेम के लिए चंदा इकट्ठा करने के लिए अपने साथियों को "कलीसियाओं के भेजे हुए" बताया (2 कुरिन्थियों 8:23; देखें प्रेरितों 20:4)। इपफ्रुदीतुस ने रोम में पौलुस के पास फिलिप्पे की कलीसिया की ओर से भेजा हुआ चंदा लाकर "दूत" का काम किया (फिलिप्पियों 2:25; 4:18)। निश्चय ही, प्रेरितों 14:4, 14 के इस शब्द का इस्तेमाल इसी अर्थ में किया गया है जहां बरनबास और पौलुस को "प्रेरित" कहा गया। बरनबास को सीधे तौर पर यीशु की ओर से नहीं भेजा गया था फिर भी उसे और पौलुस को अंताकिया की कलीसिया की ओर से पहली मिशनरी यात्रा पर भेजा गया था (प्रेरितों 13:3; 14:26)।

2. क्या प्रभु का भाई याकूब "प्रेरित" था? यह दावा यूनानी वाक्यांश *ei mē* (ई मे) के आधार पर किया जाता है जो गलातियों 1:19 में "छोड़" है। पर इस वाक्यांश का अनुवाद आम तौर पर "परन्तु केवल" किया जा सकता है और किया जाता है। यरूशलेम की कलीसिया में याकूब को मुख्य प्रतिनिधि नहीं तो भाइयों में विशेष तो माना ही जाता था। इसका कोई पक्का सबूत नहीं है कि वह उन बारहों की तरह प्रेरित था (1:19 पर टिप्पणियां देखें)।

3. क्या अन्द्रुनीकुस और यूनियास "प्रेरित" थे? रोमियों 16:7 में पौलुस ने लिखा, "अन्द्रुनीकुस और यूनियास को जो मेरे कुटुम्बी हैं, और मेरे साथ कैद हुए थे और प्रेरितों में नामी हैं, और मुझ से पहले मसीह में हुए थे, नमस्कार।" इस आयत पर काफ़ी चर्चा हो चुकी है, क्योंकि "यूनियास" शायद महिला थी,[2] अन्द्रुनीकुस और यूनियास दोनों को "प्रेरित" कहा गया लगता है। परन्तु ये दोनों निश्चित रूप में यीशु द्वारा चुने हुए बारह प्रेरितों में से नहीं थे। और यहूदा के स्थान पर मत्तियाह को चुने जाने के बाद कोई अतिरिक्त "प्रेरित" नहीं चुना गया (प्रेरितों 1:21-26) और पौलुस को मसीह की ओर से चुना गया था (प्रेरितों 9:15, 16)। इस हवाले का अर्थ यह हो सकता है कि ये दोनों "प्रेरितों में अत्यधिक सम्मानित थे" (CEV)। एक और सम्भावना यह है कि वे कलीसिया में "मिशनरी" या "दूतों" के रूप में कार्य कर रहे थे।

4. दिलचस्प बात यह है कि मसीह को भी "प्रेरित" कहा गया है। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने अपने पाठकों को समझाया कि "उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम

अंगीकार करते हैं ध्यान करो'' (इब्रानियों 3:1)। निश्चय ही यीशु मसीह को मनुष्यों के प्राणों को बचाने के मिशन पर पिता की ओर से ''भेजा'' गया था। जो वचन उसने लोगों को बताए वह पिता की ओर से उसे सौंपा गया वचन (यूहन्ना 17:6-8, 18-23) था।

टिप्पणियां

[1]जो आश्चर्यकर्म उन्होंने किए, उनमें से बहुत से उनके संदेश को प्रमाणित करने के चिह्न बने (देखें मरकुस 16:17-20; 3:1, 2; प्रेरितों 2:22; 2 कुरिन्थियों 12:11, 12; इब्रानियों 2:1-4)। [2]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अरली क्रिश्चियन लिट्रेचर,* अंक 3, शोध. एवं विस्तार., फ्रैड्रिक विलियम डेंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी आफ़ शिकागो प्रेस, 2000), 480 जिन Ἰουνία और Ἰουνιᾶς की एंटरियां देखें।

अध्ययन 3

''अकेले'' विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने का मार्टिन लूथर का तर्क

रोमियों के नाम पौलुस के पत्र का विषय ''विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाना'' है। रोमियों 3:28 में उसने इसे अपने शब्दों में कहा है: ''इसलिये हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से अलग ही, *विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता* है।'' इस मुख्य नियम की खोज करने में महान जर्मन सुधारक और अनुवादक मार्टिन लूथर ने बड़े ज़ोरदार ढंग से पवित्र शास्त्र में ''अकेला'' शब्द डाल दिया: ''*alleine durch den Glauben*'' (''अकेले विश्वास के द्वारा'')। इस जोड़े जाने के कारण उस पर उसके विरोधियों के द्वारा निर्ममतापूर्वक आक्रमण किए गए और आज लगभग पांच सौ साल बीत जाने के बाद भी उसकी आलोचना की जाती है।

Sendbrief von Dolmetschen[1] नामक अपने अपने पर्चे में लूथर ने बताया कि उसने पवित्र शास्त्र में ''अकेला'' (*alleine*) शब्द क्यों जोड़ा। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं, अपोक्रिफ़ा और नये नियम के अपने अनुवाद में रोमियों 3:28 के संदर्भ में अपने मार्जिन नोट्स में उसने स्पष्ट किया है कि रोमन कैथोलिक की ओर से कर्मों के अनुसार धर्मी ठहराए जाने पर दिए जाने वाले जोर की बात के कारण मनुष्य के धार्मिकता को प्राप्त करने के उसके अपने यत्न के अपने किसी एक विचार को नकारने के लिए ''अकेला'' शब्द का इस्तेमाल कर रहा था। इस कारण हमारे सामने समस्या मुख्य रूप में लूथर की नासमझी के कारण ही है। विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के नियम को लूथर की ओर से न केवल रोमियों के पत्र बल्कि पूरी बाइबल के मुख्य विषय के रूप में माना गया। यह बिना किसी भी मानवीय योग्यता के केवल (''अकेला'') परमेश्वर के अनुग्रह का दान था।

लूथर जिस बात का विरोध कर रहा था वह सही मायने में कट्टरवाद था। उसकी ओर से ''अकेला'' जोड़ा जाना गलत शिक्षा को बढ़ावा देना हो सकता है जो सीधे सीधे याकूब की इस बात के उलट है कि ''तुम ने देख लिया कि मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं, वरन कर्मों से भी धर्मी ठहरता है'' (याकूब 2:24)। परन्तु रोमियों 3:28 के अनुवाद से लूथर का यह बताने का कोई इरादा नहीं था। माना कि वह इन दोनों वचनों के बीच के विरोधाभास को सुलझा नहीं पाया। फिर वह रोमियों के अध्याय से इतना प्रभावित था कि उसने याकूब को ''फूस की पत्री'' तक कह दिया।[2]

लूथर की पुस्तक के कुछ आधुनिक अंग्रेज़ी अनुवादों में ''अकेला'' शब्द निकाल दिया गया है। यदि उसे इसे जोड़े जाने से आने वाली समस्याओं का पहले से पता होता तो शायद वह खुद ही इसे निकाल देता। चाहे लूथर को इस बात की कोई शंका नहीं थी कि उसके संस्करण के बारे में ''पोपवादी'' लोग क्या सोचते हैं, पर हमारा मानना है कि उसको यह अंदाजा जरूर होगा कि अनजाने में वह सदियों तक एक ऐसी ''ठोकर'' का कारण बन गया है।

रोमियों के नाम अपने पत्र में पौलुस ने "कर्मों" की बात अच्छे कामों के अर्थ में की, जिनके साथ यहूदी लोग अपनी धार्मिकता (या धर्मी ठहराए जाने) को कमाने की कोशिश करते थे। रोमियों 10:3 में उसकी बात से यह स्पष्ट हो जाता है: "क्योंकि वे परमेश्वर की धार्मिकता से अनजान होकर,[3] और अपनी धार्मिकता स्थापित करने का यत्न करके, परमेश्वर की धार्मिकता के अधीन न हुए।" निश्चय ही, इस संदर्भ में विश्वास पर आधारित धार्मिकता ही परमेश्वर की धार्मिकता है (रोमियों 10:6; देखें फिलिप्पियों 3:7-9)।

पर रोमियों में पौलुस की थ्योरी गलातियों वाली उसकी थ्योरी के साथ कैसे विकसित और तर्कसंगत है, जिसको हम पौलुस के आरम्भिक लेखों में मानते हैं पर वह एक तर्कसंगत धर्मशास्त्रीय लेख है। बाद वाला पत्र यहूदीमत की शिक्षा देने वालों की ओर से नाजुक स्थिति पैदा किए जाने के लिए लिखा गया। यह सुसमाचार को झूठा साबित करने वालों की ओर एक भावनात्मक गुस्सा है जो कि नये बने मसीहियों को सच्चाई से मोड़ रहे थे। इन दोनों पत्रों में चाहे बहुत सी समानताएं और मेल खाती बातें हैं पर उनकी *Sitz im Leben* (जीवन की स्थिति) बिल्कुल भिन्न है। अधिकतर टीकाकारों के बावजूद जो गलातियों में "कट्टरवाद" के तथ्यों पर ध्यान लगाते हैं, हम इसे बुनियादी तौर पर गलत और उनकी दलीलों को हमारा विरोध करने वाली मानते हैं।

टिप्पणियां

[1]मार्टिन लूथर, *सेंडब्रीफ वॉन डोलमेट्स* (नुरेमबर्ग: वेनज़िसलॉस लिंक, 1530)। हिन्दी में, इस शीर्षक का अर्थ है "अनुवाद पर पर्चा।" [2]ई. थिओडोर बैचमन और हेल्मुट टी. लेहमैन, संपा, *लूथर'ज़ वर्क्स,* अंक 35, *वर्ड एंड सैक्रामेंट I* (फिलाडेल्फिया: फोरट्रैस प्रेस, 1960), 362, 395-97. [3]"अनजान होकर" का अनुवाद "परवाह न करते हुए" भी हो सकता है।

अध्ययन 4

आत्मा के दान तथा अन्यभाषा बोलने का दान

बाइबल में आत्मा की सामर्थ को कई तरीकों से दिखाया गया है। इसे भविष्यवाणी करने के लिए, चंगाई देने के लिए, सामर्थ के काम करने के लिए और मुर्दों को जिलाने के लिए "मनुष्य के ऊपर आने" के रूप में बताया गया है। परन्तु, यीशु के जी उठने के बाद वाले पहले पिन्तेकुस्त से पहले, जिसमें योएल 2:28-32 की भविष्यवाणी पूरी हुई थी, आत्मा मनुष्य पर पहले कभी नहीं "उण्डेला गया" था (प्रेरितों 2:17-21; देखें 10:44, 45)।[1]

एक अर्थ में, यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई के दौरान आत्मा अभी दिया नहीं गया था। डेरों के पर्व पर यीशु जब यरूशलेम में था तो उसने लोगों को "जीवन के जल की नदियों" को पाने के लिए जो उनके "हृदय में से" निकलनी थीं, उसके पास आने की चुनौती दी। अर्थ को स्पष्ट करते हुए यूहन्ना ने समझाया, "जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्रशास्त्र में आया है, 'उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी।' उसने यह वचन पवित्र आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था, क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था" (यूहन्ना 7:38, 39)। ऐसा नहीं था कि आत्मा काम नहीं कर रहा था बल्कि वह यीशु और उन चेलों के जीवनों में काम कर रहा था। उसने उन्हें दुष्ट आत्माओं को निकालने तथा और कई आह्यश्यर्चकर्म करने की सामर्थ दी (लूका 9:1; 10:9, 17-20; प्रेरितों 10:38)। पर वे "नदियां" जो विश्वासी में से निकलनी थीं जिसकी बात यीशु कर रहा था, तब तक नहीं बहनी थीं, जब तक उसने पिता के पास वापस उठाए जाकर "महिमा" में नहीं आना था (देखें यूहन्ना 17:1-5; इफिसियों 4:8-10)।

यीशु ने अपने स्वर्ग में उठाए जाने के बाद अपने वचन को पूरा किया (लूका 24:44-49; प्रेरितों 1:4, 5; 2:14-18, 21, 38-39)। आरम्भिक मसीहियों को उस संदेश को "दृढ़" (*bebaioō*) या प्रमाणित करने के लिए जिसे वे फैला रहे थे, आत्मा के कई और अलग अलग दान दिए गए। "परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों, और अद्‌भुत कामों, और पवित्र आत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा [था]" (इब्रानियों 2:3, 4; देखें मरकुस 16:15-20)। इब्रानियों के लेखक ने दानों के बहुत होने की बात की, जोकि निश्चय ही, उस युग में आवश्यक थे, क्योंकि नया नियम उस समय लिखित रूप में उपलब्ध नहीं था और सीधे परमेश्वर की ओर से दिया गया मौखिक संदेश, उनकी आवश्यकता थी।

आत्मा के दानों में से एक दान अन्य भाषाएं बोलना था। पिन्तेकुस्त के दिन जब आत्मा प्रेरितों पर उण्डेला गया था तो "वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे" (प्रेरितों 2:4)। "भाषा बोलना" (*heterais glōssais*) निश्चय ही, "विदेशी भाषा" को छोड़ और कुछ नहीं था। एक जबर्दस्त बात यह थी कि ये अनपढ़ गलीली लोग अलग-अलग भाषा बोलने वाली भीड़

को सम्बोधित कर रहे थे, जो दुनिया भर में फैले हुए यहूदी इलाकों से यरूशलेम में आए थे। हर किसी को, चाहे वह किसी जगह का रहने वाला हो, संदेश अपनी ही "भाषा" में सुनाई देता था (प्रेरितों 2:5-11)।

कइयों ने यह दलील दी है कि यह आश्चर्यकर्म सुनने का चमत्कार था, परन्तु बाइबल साफ़ बताती है कि प्रेरित *heterais glōssais* में बोल रहे थे जो कि "विदेशी भाषाओं" के लिए प्रतिदिन बोली जाने वाली यूनानी भाषा थी। गलीली लोग भाषा जानकार नहीं माने जाते थे और प्रेरितों के अरामी भाषा बोलने के उच्चारण को भी वहां मौजूद लोगों ने पहचान लिया था (प्रेरितों 2:7; देखें मत्ती 26:69-73)। निश्चय ही, भीड़ के आश्चर्य का कारण कोई ऐसी बात थी जो कि रहस्यपूर्ण ढंग से हुई थी और यह भाषा का आश्चर्यकर्म एक और आश्चर्यकर्म की बात थी जिसने उन यात्रियों का ध्यान खींचा। "विदेशी" होने के कारण वे इन स्थानीय पलिश्तियों को, उन यात्रियों की मातृ भाषा में ज़बर्दस्त तरीके से बोलते हुए सुन चकित हुए बिना नहीं रह सके।

अन्य भाषाओं में बोलना प्रभु की ओर से आरम्भिक कलीसिया को दिए दानों में से एक "आत्मिक दान" (*charisma*) था। इसमें कुछ भी रहस्यपूर्ण बात नहीं थी, सिवाय इसके कि इसमें किसी विदेशी भाषा को बोलने के लिए सीखे जाने वाला हज़ारों घण्टों का थका देने वाला अध्ययन नहीं करना पड़ा था। ऐसा कोई भी सबूत नहीं है कि कुरनेलियुस के घर में दी गई यह "भाषाएं" (प्रेरितों 10:45, 46) पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में यहूदियों को दी जाने वाली भाषाओं से किसी प्रकार से अलग थीं। वास्तव में प्रेरितों 11:15-18 और 15:7-11 में पतरस ने इसी बात को साबित किया। फिर ऐसा कोई सबूत नहीं है कि 1 कुरिन्थियों 12-14 वाली "भाषाएं" (*glōssa* से) किसी भी प्रकार से आश्चर्जनक ढंग से दी गई जातीय भाषाओं से अलग थीं। प्रकाशितवाक्य में बार-बार यही मिलता है (प्रकाशितवाक्य 5:9; 7:9; 10:11; 11:9; 13:7; 14:6; 17:15)। प्राचीन और आधुनिक दोनों कई भाषाओं का विद्यार्थी होने के कारण मैं केवल कल्पना कर सकता हूं कि मेरे लिए ऐसा दान कितना समय बचाने वाला होगा।

टिप्पणियां

[1]पिन्तेकुस्त वाले दिन होने वाली और कुरनेलियुस के घर तथा फिर दूसरी बार कुरनेलियुस के घर होने वाली घटना अनोखी है और यरूशलेम के यहूदी मसीहियों ने इसे सच माना (प्रेरितों के काम 11:15-18; 15:7-11)। पिन्तेकुस्त और इसकी घटनाओं के सुसमाचार के युग के आरम्भ और आत्मा के वास का संकेत दे दिया।